कविता....

नफरत के सियासत दानों ने, आतंक के ठेके दरों नें,

मेरे देश के दिल को तोड़ा है, मेरे देश को जलता छोड़ा है....

जहाँ लहू का कोई मोल नहीं और इन्सानों में मेल नहीं,

जहाँ दहशत का ही राज चले, किस राह पे लाकर छोड़ा है....

जहाँ लोकतंत्र का खून बहे, जहाँ "जाति" विवाद का कारण हो,

जहाँ नेता ही अभिनेता हो, किस दिशा में देश को मोड़ा है.....

जिस महल के चौकीदार थे तुम, उस महल को तुम ने लूटा है,

जिस गुलशन के तुम माली थे, हर कली को तुम ने तोड़ा है....

जो ख्वाब सजाये थे हमने, उस ख्वाब को तुम ने कुचला है,

जिसे मील का पत्थर जाना था, वह पत्थर नहीं था रोड़ा है....

क्या ज़ुल्म से थकते हो तुम भी, तुम्हें रहम भी खाना आता है,

क्या शरम भी तुम को आएगी, क्या सोच के यूँ तू अकड़ा है....

अब बंद करो यह नौटंकी खुल चुकी तुम्हारी सच्चाई,

इक तुम्हीं हो जिस के कारणवश, हर रोज़ नया इक झगडा है....

इतिहास के पन्नों को खोलो, अंजाम जालिमों के देखो,

यहाँ बड़े बड़ों के पांव भी इस अहंकार में उखड़ा है ....

लेखक : मुहम्मद सद्दाम हुसैन अज़हरी / क़ाहिरा (मिस्र)